International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-02-2026, Accepted: 26-03-2026, Published: 10-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 45-47

डॉ० दिनेश कुशवाह का काव्य संग्रह 'इसी काया में मोक्ष': समकालीन जीवन, श्रम और संवेदना का काव्य–दस्तावेज

मोनिका
सहायक आचार्य, बी०के०डी० कॉलेज फॉर वुमन देवीनगर, पांवटा साहिब, जिला सिरमौर हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
कवि मूलतः एक सजग द्रष्टा होता है। वह समाज में घटित होने वाली घटनाओं को संवेदनशील दृष्टि से देखता है और उन्हें अपनी अनुभूति में रूपांतरित करता है। इसी कारण उसकी रचनाएँ सामान्य मनुष्य के अनुभवों से जुड़ी होने के बावजूद व्यापक सामाजिक अर्थ ग्रहण कर लेती हैं। डॉ. दिनेश कुशवाह की कविताओं में यही विशेषता दिखाई देती है। वे समाज के यथार्थ को ईमानदारी से प्रस्तुत करते हैं और अपने काव्य के माध्यम से पाठकों को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. दिनेश कुशवाह के काव्य संग्रह इसी काया में मोक्ष के आलोक में उनके सामाजिक, राजनैतिक और मानवीय सरोकारों का विश्लेषण किया गया है। कुशवाह की कविताएँ केवल शब्दों का विन्यास नहीं हैं, बल्कि वे समाज के हाशिए पर खड़े व्यक्ति की जिजीविषा और संघर्ष का दस्तावेज हैं। इस आलेख में उनकी कविताओं में व्याप्त रागात्मकता, ओज और यथार्थवाद के अंतर्संबंधों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः जिजीविषा, भिक्षा, बेरोज़गारी, पिता, तमाशा, युवा

समकालीन हिंदी कविता के परिदृश्य में डॉ. दिनेश कुशवाह एक ऐसे कवि के रूप में उभरते हैं, जिनके पास 'संवेदनात्मक ज्ञान' और 'आलोचकीय विवेक' का दुर्लभ समन्वय है। उनका काव्य संग्रह इसी काया में मोक्ष मानव जीवन के सूक्ष्म प्रसंगों से लेकर वैश्विक विसंगतियों तक का एक विस्तृत फलक प्रस्तुत करता है। उनकी काव्य–शैली बोझिल जटिलताओं से मुक्त है, जिसमें सहजता और रोचकता का अनूठा प्रवाह विद्यमान है। समकालीन हिंदी साहित्य में डॉ. दिनेश कुशवाह एक सशक्त और संवेदनशील कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी काव्य–दृष्टि समाज के यथार्थ से गहराई से जुड़ी हुई है। वे अपने काव्य में जीवन के विविध पक्षों—सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक—का सहज और प्रभावी चित्रण करते हैं। उनका काव्य–संग्रह 'इसी काया में मोक्ष' समकालीन जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और मानवीय अनुभूतियों का सजीव दस्तावेज है। इस काव्य संग्रह में कुल इक्यावन कविताएँ हैं। इस संग्रह की सभी कविताएँ यद्यपि सरल भाषा में लिखी गई हैं, किन्तु उनके भीतर गहन अर्थ निहित हैं। कवि ने सामान्य जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं को व्यापक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। समकालीन हिंदी कविता के परिदृश्य में डॉ. दिनेश कुशवाह एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। उनका काव्य सृजन संवेदनात्मक ज्ञान और आलोचकीय विवेक का मणिकांचन संयोग है। 'इसी काया में मोक्ष' संग्रह की कविताएँ अपनी भाषाई सहजता और शिल्पगत सरलता के बावजूद जीवन के गहरे दर्शन को उद्घाटित करती हैं। कुशवाह एक सजग 'द्रष्टा' के रूप में समाज की सूक्ष्म घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं और उसे पूरी ईमानदारी के साथ काव्य–रूप प्रदान करते हैं।

संग्रह की प्रतिनिधि कविता पिता की चिता जलाते हुए में कवि ने एक पुत्र की मार्मिक स्मृतियों के माध्यम से श्रमिक वर्ग के जीवन की कठोरता को रेखांकित किया है। यहाँ पिता केवल एक पारिवारिक इकाई नहीं, बल्कि उस अनवरत श्रम का प्रतीक है जो 'लोहे को शक्ल' देने के संघर्ष में स्वयं को होम कर देता है। वे लिखते हैं कि–––

"पिता ने जीवन भर चलाया मन भर का हथौड़ा
लोहे को देते रहे तरह–तरह की शक्ल
पर अब बीडी के जले ठुठे ही उनकी याद दिलाएंगे
कि धौकनी – की सी उनकी छाती
थाली में रखा चुटकी भर नमक
और एक हरी मिर्च थी उनकी ऑखें"[1]

यह पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि एक श्रमिक पिता अपने परिवार के लिए स्वयं को गलाकर एक सुरक्षा कवच निर्मित करता है। कवि यहाँ अभावों (नमक और मिर्च) को जिस बिम्ब के साथ प्रस्तुत करता है, वह पाठक के भीतर गहरी करुणा उत्पन्न करता है। यह पंक्ति केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। कवि यह दर्शाते हैं कि पिता अपने परिवार के लिए निरंतर संघर्ष करता है, परंतु उसका मूल्य अक्सर उसके जाने के बाद ही समझ में आता है। इसी संदर्भ में कवि श्रम के महत्त्व को रेखांकित करते हुए साधुता को श्रम से जोड़ने की बात करते हैं। कबीर और रैदास जैसे संतों का उदाहरण देकर वे बताते हैं कि सच्चा आध्यात्मिक जीवन कर्म और श्रम से जुड़ा होता है। निम्नलिखित पंक्तियों में कवि अपनी बात को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि –––

"इसलिए जनता को शस्त्र नहीं
कविता से शिक्षित करो
साधुता को श्रम से जोड़ो
भिक्षा से मुक्त करो
साधुता जहाँ बसती है
जहाँ जूता गांठते हैं रैदास
चादर बुनते हैं कबीर"[2]

कवि कुशवाह की वैचारिकता प्रगतिशील मूल्यों से अनुप्राणित है। वे 'साधुता' को निष्क्रियता या भिक्षावृत्ति से अलग कर उसे 'श्रम' के साथ जोड़ते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि समाज को विनाशकारी शस्त्रों की नहीं, बल्कि कविता और शिक्षा की आवश्यकता है जो मनुष्य को विवेकशील बना सके। कवि के काव्य में प्रेम एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। प्रेम को कवि जीवन की ऊर्जा के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार प्रेम मनुष्य को जीने की प्रेरणा देता है और उसके अभाव में जीवन नीरस हो जाता है। इसी जनम में कविता प्रेम को एक ऐसी शक्ति के रूप में देखते हैं जो संसार को देखने का दृष्टिकोण बदल देती है।

कविता में प्रेम की शक्ति और उसके प्रभाव को सरल शब्दों में व्यक्त किया गया है :–––

"प्यार करके हमने
सिर्फ महसूस किया है
कि उसके मिलते ही
एक दिन में ही बदल जाती है दुनिया
कि उसके टूटते ही
एक दिन में बदल जाती
है दुनिया"[3]

कलकत्ता कविता में प्रवासी जीवन की पीड़ा और संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया गया है। कवि ने दिखाया है कि एक ओर पिता के लिए शहर संघर्ष का प्रतीक है, वहीं बच्चों के लिए वह आशा और सुख का प्रतीक बन जाता है। इस प्रकार कविता में जीवन के दो भिन्न दृष्टिकोण एक साथ उपस्थित होते हैं। यह कविता बताती है कि आर्थिक मजबूरियाँ किस प्रकार व्यक्ति को अपने घर से दूर कर देती हैं और उसका जीवन संघर्षमय बना देती हैं। कवि अत्यंत सहजता से एक परिवार की कार्यशैली को चित्रित करते हुए लिखते हैं कि –

"कलकता माने था पिता के लिए
अपने हाथ से बर्तन मांजना
चूल्हा फूंकना, भात पकाना
कलकत्ता माने था हमारे लिए
नये कपड़े, गत्ता–बताशा
छो–छो पईसा चल कलकत्ता"[4]

'कलकत्ता' कविता के माध्यम से कवि ने विस्थापन के दर्द और मध्यमवर्गीय आकांक्षाओं के द्वंद्व को चित्रित किया है। एक बच्चे के लिए शहर जहाँ खिलौनों और मिठाइयों का प्रतीक है, वहीं एक पिता के लिए वह श्रम की वेदी है। कवि भूमंडलीकरण के इस दौर में संवाद बढ़ने के बावजूद युद्ध और शोषण के न घटने पर प्रश्न उठाते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि तकनीकी प्रगति के बावजूद युद्ध की वेदी पर सदैव आम आदमी ही बलि चढ़ता है। कवि ने वैश्विक स्तर पर होने वाले युद्धों और संघर्षों पर भी अपनी दृष्टि डाली है। वे बताते हैं कि आधुनिकता और तकनीकी विकास के बावजूद युद्ध समाप्त नहीं हुए हैं। भूमंडलीकरण के दौर में जहाँ संवाद के साधन बढ़े हैं, वहीं 'युद्ध' की विभीषिका भी बढ़ी है। कवि का मानना है कि तकनीक और हथियार बदलने के बावजूद मरने वाला सदैव 'आम आदमी' ही होता है।

"आपसी बातचीत बढ़ी है दुनिया में
पर कम नहीं हुए हैं प्रश्न
दुनिया में आदान–प्रदान बढ़ा है
पर कम नहीं हुए हैं युद्ध
युद्ध के सरे हथियार बदले हैं
पर एक चीज बिल्कुल नहीं बदली
कि युद्ध में अभी भी मरता है आदमी"[5]

ये पंक्तियां मानवता के प्रति कवि की गहरी चिंता को व्यक्त करती है। कवि शांति और संवाद के माध्यम से समस्याओं के समाधान की बात करते हैं। समकालीन समाज में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या है।
बेरोजगार मित्र की डायरी से कविता में कवि ने युवा वर्ग की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। कवि ने कविता में शिक्षित युवा की उस विवशता का यथार्थ चित्रण है, जहाँ वह अपने अस्तित्व और अभिभावकों के सपनों के बीच पिस रहा है। निम्नलिखित पंक्तियों में युवा बेरोजगार के मन में उठने वाले भावों को यथार्थ अभिव्यक्ति देने का प्रयास कवि ने किया है :––

"बहुत चाहता हूँ पूरे कर दूँ
बूढ़े माँ– बाप के सपने
नहीं तो कम से कम उन्हें
आश्वस्त कर दूँ
कि उनके मरने के बाद भूखों नहीं मरूँगा"[6]

इन पंक्तियों में एक बेरोजगार युवक की असहायता, संघर्ष और आत्मग्लानि स्पष्ट दिखाई देती है। यह कविता केवल व्यक्तिगत पीड़ा ही नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक समस्या को भी उजागर करती है।
भेड़ियों से बचाने आएगा भेड़िया और साँप जैसी कविताएँ सत्ता की क्रूरता और व्यवस्था के छल–कपट को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं। वहीं भोग कविता उपभोक्तावादी संस्कृति पर कड़ा प्रहार है, जहाँ कवि जयललिता और माधुरी दीक्षित जैसे उदाहरणों के माध्यम से संचय की प्रवृत्ति और किसान के अभाव के बीच की खाई को उजागर करते हैं। भोग कविता उपभोक्तावादी संस्कृति और किसान के शोषण के बीच के अंतर को स्पष्ट करती है। कवि का मूल ध्येय समाज के दबे–कुचले वर्ग को वाणी देना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना है। वे लिखते हैं कि –

"पेप्सी कोला में कितनी स्वच्छ गंगा?
लक्स में क्या खास बात हो जाती है
जब नहाती है माधुरी दीक्षित?
कि सात सौ जोड़ी जूतियों का
क्या करती होगी जयललिता?"[7]

कवि यह संकेत करते हैं कि जहाँ एक ओर कुछ लोग अत्यधिक संसाधनों का उपभोग करते हैं, वहीं दूसरी ओर अनेक लोग मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित हैं।
कवि कुशवाह की कविता साँप केवल एक जीव पर आधारित रचना नहीं है, बल्कि यह देश के क्रांतिकारियों और दलित समाज के संघर्षों को समर्पित एक गहरा रूपक है। इस कविता में 'बूढ़ा सपेरा' और 'पिटारे में बंद साँप' के माध्यम से कवि जीवन की जटिलताओं और व्यवस्था के अंतर्विरोधों को उजागर करते हुए लिखते हैं :––

"ज़िन्दगी बड़ी कठिन है बेटे अपने आप में
बुदबुदाया बूढ़ा सपेरा
पिटारे में बंद सांप से
ज़िन्दगी तमाशा नहीं है
पर तमाशा ज़रूरी है ज़िन्दगी के लिए"[8]

कवि इन पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि दलित और वंचित वर्गों के लिए अपनी पहचान बनाए रखना स्वयं में एक अनवरत संघर्ष है, जहाँ उन्हें अस्तित्व बचाने के लिए परिस्थितियों के अनुरूप 'तमाशा' (संघर्ष का प्रदर्शन) करना पड़ता है।
डॉ. दिनेश कुशवाह की कविता 'भेड़ियों से बचाने आएगा भेड़िया' सत्ता के छद्म और व्यवस्था के अंतर्विरोधों पर प्रहार करने वाली एक अत्यंत सशक्त रचना है। यह कविता सत्ता के छद्म रूप पर प्रहार करती है। यहाँ 'भेड़िया' उन हिंसक और लालची शोषकों का प्रतीक है जो 'मशाल' (मिथ्या आश्वासन) लेकर रक्षक के भेष में आते हैं। कवि यहाँ जनता को उन छद्म उद्धारकर्ताओं से सावधान रहने का साहस प्रदान करते हैं। कवि व्यवस्था के उस

विरोधाभास को रेखांकित करते हैं जहाँ शोषक ही स्वयं को उद्धारकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है। कवि लिखतें हैं :——

"भेड़िया आएगा
मगर इस बार
उसकी आँखे चमक रही होंगी
मशाल की तरह
कहेगा स्वागत करो
कोई तो खड़ा है लेकर मशाल
तुम्हें भेड़िये से बचाने के लिए"[9]

यह कविता पाठक को यह सोचने पर विवश करती है कि क्या भेड़िये (शोषक) से बचने के लिए किसी अन्य भेड़िये पर विश्वास करना उचित है ? कवि यहाँ प्रतीकात्मक अर्थ में यह संदेश देते हैं कि मुक्ति का मार्ग किसी बाह्य 'उद्धारकर्ता' की प्रतीक्षा में नहीं, बल्कि स्वयं की शक्ति और विवेक को पहचानने में निहित है। यह रचना जनता को उन मशालों (छलावे) से सावधान करती है जो वास्तव में विनाश की राह प्रशस्त करती है।

समाज के प्रत्येक वर्ग की स्थिति को संवेदनशीलता के साथ अनुभव कर उसे काव्य में अभिव्यक्त करना कवि दिनेश कुशवाह की विशिष्टता है। वे विशेष रूप से उन वर्गों को वाणी देना चाहते हैं, जो समाज में उपेक्षित और दबे हुए हैं तथा अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। कवि का हृदय देश के अन्नदाता किसान के प्रति गहरी संवेदना से भरा है। अपनी कविता 'भोग' में ही वे उपभोक्तावादी समाज को आत्म–चिंतन के लिए विवश करते हैं। वे लिखते हैं कि अन्न ग्रहण करते समय मनुष्य को उस मिट्टी और पसीने का स्मरण करना चाहिए जिससे वह अनाज उपजा है :——

"मुँह में कौर डाले तो सोचे
उस खेत के बारे में
जहां से आता है अनाज
और मैं सोचने लगा
कौन पैदा करता है अनाज"[10]

इस प्रकार कवि पाठक को उस मूल स्रोत से जोड़ते है जो समाज का आधार स्तंभ है, किंतु स्वयं उपेक्षित है।कवि हमें श्रम के प्रति संवेदनशील और कृतज्ञ बनने की प्रेरणा देते हैं।

कवि केवल समस्याओं का चित्रण ही नहीं करते, बल्कि एक पथप्रदर्शक की भूमिका भी निभाते हैं। रात के सफर में कविता के माध्यम से वे यह सन्देश देते हैं कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधक को तब तक विश्राम नहीं करना चाहिए जब तक वह सफल न हो जाए। वे कविता को केवल कोमल भावों की अभिव्यक्ति न मानकर उसे संघर्ष का पर्याय मानते हैं।

"रंगों में अभिव्यक्ति तलाशना
या सिर्फ कविता लिखना काफी नहीं
उद्देश्य के लिए अनवरत
संघर्षों की आग में तपों
क्योंकि गंतव्य के रास्ते में
कोई फिसलन नहीं होनी चाहिए।"[11]

इस प्रकार कवि लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनका मानना है कि केवल विचार या अभिव्यक्ति पर्याप्त नहीं है, बल्कि उद्देश्य की पूर्ति के लिए सतत संघर्ष आवश्यक है। मनुष्य को तब तक आगे बढ़ते रहना चाहिए, जब तक वह अपने लक्ष्य को प्राप्त न कर ले। कवि कुशवाह की दृष्टि में जीवन केवल अस्तित्व बनाए रखना नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होना है। अपनी कविता 'पाश' में वे विद्रोह और जुझारूपन को ही जीवन की सार्थकता मानते हैं। उनका विश्वास है कि जो अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करेगा, अंततः जीत उसी की होगी। वे अधिकारों के प्रति जागरूकता का संदेश देते हुए आह्वान करते हैं :

"सवाल है
हम जिंदा कैसे हैं ?
जवाब तुम हो
हम लड़ेंगे साथी ।"[12]

यह पंक्तियाँ कवि की उस प्रगतिशील विचारधारा को पुष्ट करती हैं जो यथास्थितिवाद को तोड़कर परिवर्तन की मांग करती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि डॉ. दिनेश कुशवाह ने अपने काव्य–संग्रह इसी काया में मोक्ष में विविध विषयों को अत्यंत सरल, सहज और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कविताएँ न केवल सामाजिक यथार्थ को उजागर करती हैं, बल्कि पाठकों को नए विचार और सकारात्मक दिशा भी प्रदान करती हैं। प्रगतिशील दृष्टिकोण से युक्त उनका काव्य समकालीन समाज की सशक्त अभिव्यक्ति है। उनकी कविताएँ न केवल सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करती हैं, बल्कि पाठकों के भीतर जागरूकता, संवेदनशीलता और परिवर्तन की प्रेरणा भी उत्पन्न करती हैं। प्रगतिशील दृष्टिकोण से समृद्ध यह काव्य समकालीन हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। एक प्रगतिशील विचारधारा के संवाहक के रूप में डॉ. कुशवाह ने समकालीन विसंगतियों को वाणी देकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ० दिनेश कुशवाह, पिता की चिता जलाते हुए, पृ० सं० 13
2. वही, पृ० सं० 11 –12
3. वही, इसी जनम में, पृ० सं० 31
4. वही, कलकत्ता ,पृ० सं० 22
5. वही, बेरोजगार मित्र की डायरी से, पृ० सं० 58
6. वही, पृ० सं० 41
7. वही, भोग, पृ० सं० 109
8. वही, साँप, पृ० सं० 63
9. वही, भेड़ियों से बचाने आएगा भेड़िया, पृ० सं० 100
10. वही, भोग, पृ० सं० 110
11. वही, रात के सफर में, पृ० सं० 67
12. वही, पाश ,पृ० सं० 101